''शरीर से निकल कर परमात्मा निर्विशेष ब्रह्मज्योति में प्रवेश करते हैं; फिर अपने दिव्य स्वरूप में रहते हैं। उन्हीं परमेश्वर का नाम उत्तम पुरुष है।'' इसका अर्थ हुआ कि वे उत्तम पुरुष अपनी दिव्य ज्योति को, जो प्रकाश की परम निधान है, प्रकट-अप्रकट करते रहते हैं। उन उत्तम पुरुष का परमात्मा नामक एकदेशीय रूप भी है तथा सत्यवती और पराशर के पुत्र व्यासरूप में अवतार लेकर वही वैदिक ज्ञान का प्रतिपादन करते हैं।

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।।१८।।

यस्मात्=क्योंकि; **क्षरम्**=क्षर पुरुष से; **अतीतः**=परे (हूँ); **अहम्**=मैं; **अक्षरात्** **अपि**=अक्षर पुरुष से भी; **च**=तथा; **उत्तमः**=श्रेष्ठ (हूँ); **अतः**=इसलिए; **अस्मि**=हूँ; **लोके**=संसार में; **वेदे च**=वेद में भी; **प्रथितः**=प्रसिद्ध; **पुरुषोत्तमः**=पुरुषोत्तम।

अनुवाद

मैं क्षर-अक्षर दोनों से परे, सबसे उत्तम हूँ; इसलिए संसार में और वेदों में पुरुषोतम नाम से प्रसिद्ध हूँ।।१८।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण की तुलना न तो बद्धजीव कर सकते हैं और न मुक्त जीव ही कर सकते हैं। अतः वे परमोत्तम पुरुष हैं। यहाँ से स्पष्ट है कि जीव और श्रीभगवान्, सबका अपना-अपना स्वरूप है। दोनों में अन्तर यह है कि जीव चाहे बद्ध हो अथवा मुक्त, परन्तु विस्तार में श्रीभगवान् की अचिन्त्य शक्तियों का अतिक्रम कभी नहीं कर सकता।

यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम्।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत।।१९।।

यः=जो; **माम्**=मुझे; **एवम्**=इस प्रकार; **असम्मूढः**=संशयरहित; **जानाति**=जानता है; **पुरुषोत्तमम्**=पुरुषोत्तम; **सः**=वह; **सर्ववित्**=सम्पूर्ण वेद के तात्पर्य को जानने वाला; **भजति**=भक्तियोग द्वारा उपासता है; **माम्**=मुझे; **सर्वभावेन**=सब प्रकार से; **भारत**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे अर्जुन! जो कोई भी इस प्रकार मुझे निश्चित रूप से पुरुषोत्तम जानता है, वह सब कुछ जानता है और पूर्ण रूप से मेरे भक्तियोग के परायण हो जाता है।।१९।।

तात्पर्य

जीव-स्वरूप और परतत्त्व-स्वरूप के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के दार्शनिक वाद-विवाद हैं। यहाँ भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट किया है कि जो कोई उन्हें तत्त्व से पुरुषोत्तम जानता है, वही वास्तव में सर्वज्ञ है। अपूर्ण ज्ञानी परतत्त्व विषयक तर्क ही